DR Krishnadeo kumar bharti
Assistant professor (G.T)
Dept of Political science
C.M.j College Donwarihat
Khutauna, Madhubani
Email-Kdkbharti08@gmail.com
B.A Part-1 Paper-2 Date-19-08-2020

जयप्रकाश नारायण की समाजवादी अवधारणा की विवेचना----

जयप्रकाश नारायण भारत के उन विचारकों में से एक थे जिन्होंने समाजवाद की स्थापना के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया।महात्मा गाँधी भी उन्हें भारतीय समाजवाद का विद्वान मानते थे।उन्होंने अपनी पुस्तक 'समाजवाद क्यों 'में यह बताया है कि समाजवाद एक व्यक्तिगत आचरण संहिता न होकर सामाजिक संगठन की एक प्रणाली है।उनके अनुसार समाजवाद आर्थिक और सामाजिक पुनर्निर्माण का सिद्धन्त है।समाजवाद का उद्देश्य समाज का समन्वित विकास करना है जयप्रकाश नारायण यह मानते थे कि भारत की विभिन्न समस्याओं का हल समाजवाद में निहित है।उन्होने सिन्ध में कांग्रेस समाजवादी दल के सम्मुख भाषण में कहा था-"भारत एक विशाल देश है।उसकी विभिन्न समास्याओं का समाधान समाजवाद के पास है। समाजवाद की सभी शक्तियों को एक होकर इसकी स्वतंत्रता के संघर्ष में योग देना चाहिए।समता और बन्धुत्व के लिए कार्य करना चाहिए।"जयप्रकाश नारायण समाजवाद की ओर माक्र्स के साहित्य के अध्ययन के माध्यम से ही खिंच गये थे।शुरू में माक्र्सवाद को ही समाजवाद का एकमात्र प्रामाणिक स्वरूप मानते थे। किन्तु इस संदर्भ में जयप्रकाश नारायण का चिन्तन उनके अनुभवों के साथ धीरे धीरे विकसित एवं रुपान्तरित होता गया।उन्होंने प्रतिपादित किया कि किसी स्थान विशेष की परिस्थितियों समस्याओं, पृष्ठभूमि एवं जनमानस की प्रकृति आदि को ध्यान में रखकर ही समाजवाद की व्याख्या की जानी चाहिए।जयप्रकाश नारायण के समाजवादी विचारों को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है---

१.माक्र्सवादी समाजवाद के समर्थक के रूप में
२.लोकतांत्रिक समाजवाद के समर्थक के रूप में
३.गाँधीवादी समाजवाद तथा सर्वोदयी के रूप में

१.अपने समाजवादी विचारों के चिन्तन के प्रारम्भिक चरण में जयप्रकाश नारायण ने माक्र्सवाद को ही समाजवाद का एकमात्र सिद्धन्त माना।जयप्रकाश नारायण ने सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों की व्याख्या हेतु माक्र्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद तथा वर्ग संघर्ष एवं अतिरिक्त मूल्य के सिद्धन्त का समर्थन भी किया, परन्तु फिर भी जयप्रकाश माक्र्स के कट्टर अनुयायी नहीं बने।समाजवाद की व्याख्या में उनकी मौलिक दृष्टि भी उभरी।उनके विचार प्रारम्भिक स्तर पर निम्न प्रकार थे--

*1.*समाजवाद एक आर्थिक सिद्धन्त---समाजवाद सामाजिक पुनर्निर्माण की एक सम्पूर्ण पद्धति है।उनके मत में समाजवाद का उद्देश्य समग्र समाज का समरस और संतुलित विकास करना है।माक्र्स की तरह जयप्रकाश भी इसे मूल रूप में एक आर्थिक सिद्धन्त मानते थे।
*2.*निजी सम्पत्ति का विरोध----सम्पत्ति के व्यक्तिगत अधिकार का जयप्रकाश नारायण ने विरोध किया, क्योंकि उनके मत में व्यक्तिगत सम्पत्ति का कोई नैतिक, वैज्ञानिक या व्यावहारिक आधार नहीं है।
*3.*आर्थिक ताकतों की प्रधानता के साथ ही द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद एवं वर्ग संघर्ष में विश्वास---सामाजिक विकास की एक पद्धति के रूप में जयप्रकाश द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद तथा वर्ग संघर्ष की धारणा को स्वीकार करते हैं।जयप्रकाश नारायण, कार्ल मार्क्स के इस मत को स्वीकार करते है कि भौतिक शक्तियाँ ही मनुष्य की समस्त क्रियाओं को प्रभावित करती है तथा माक्र्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद असमानता के कारणों की खोज को विश्वासपूर्ण आधार प्रदान करता है।
*4.*समाजवादी समाज की स्थापना हेतु जन समर्थन तथा सत्ता पर नियंत्रण जरूरी----जयप्रकाश नारायण का मत है कि देश में राजनितिक एवं आर्थिक संरचना का समाजवादी रुपांतरण तभी संभव है जब समाजवादी समर्थक जन समर्थन प्राप्त करके सत्ता पर कब्जा करें।यही माक्र्स का स्पष्टतः कहना था।

२.लोकतांत्रिक समाजवाद के समर्थक के रूप में-----

ज्यों ज्यों जयप्रकाश नारायण का वैचारिक विकास हुआ तथा उनका भारतीय समाज की विभिन्न समास्याओं से सामना हुआ तो उनका समाजवादी चिन्तन में नया मोड़ लेने लगा।सोवियत संघ में लागू किये गये समाजवाद के तौर तरीकों दमन क्रूरता आदि से उनका माक्र्सवादी झुकाव डगमगाने लगा।धीरे धीरे माक्र्सवाद के आधारभूत सिद्धन्तों पर भी उन्हें संदेह होने लगा।*1940* तक आते आते उन्होंने अपने समाजवादी चिन्तन को माक्र्सवादी न कहकर लोकतांत्रिक समाजवाद कहना शुरू कर दिया।

३.गाँधीवादी समाजवाद तथा सर्वोदयी चिन्तक के रूप में----समय एवं चिन्तन विकास ने जयप्रकाश नारायण को यह कहने एवं सोचने को मजबूर कर दिया कि माक्र्सवाद के प्रति उनका समर्थन अपरिपक्व तथा प्रारम्भिक विभ्रम था।साथ ही राज्य की दण्ड शक्ति द्वारा कतिपय देशों में लोकतांत्रिक समाजवाद की स्थापना के प्रयोग की सीमाओं ने भी जयप्रकाश नारायण को नई सोच की ओर मुड़ने को बाध्य कर दिया।चिन्तन के आखिरी शिखर पर जयप्रकाश नारायण इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वास्तविक समाजवाद की स्थापना के लिए संगठित है।इसे जागृत करके ही वास्तविक समाजवाद लाया जा सकता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि जयप्रकाश नारायण की समाजवादी चिन्तन धारा ने चिन्तन के विकास के साथ साथ महत्वपूर्ण बदलाव तथा अन्ततः गाँधीवादी सर्वोदयी मोड़ पर आकर अपना पड़ाव डाला।

आगे, धन्यवाद।

2020-08-19
From vivo Note

Scanned with CamScanner